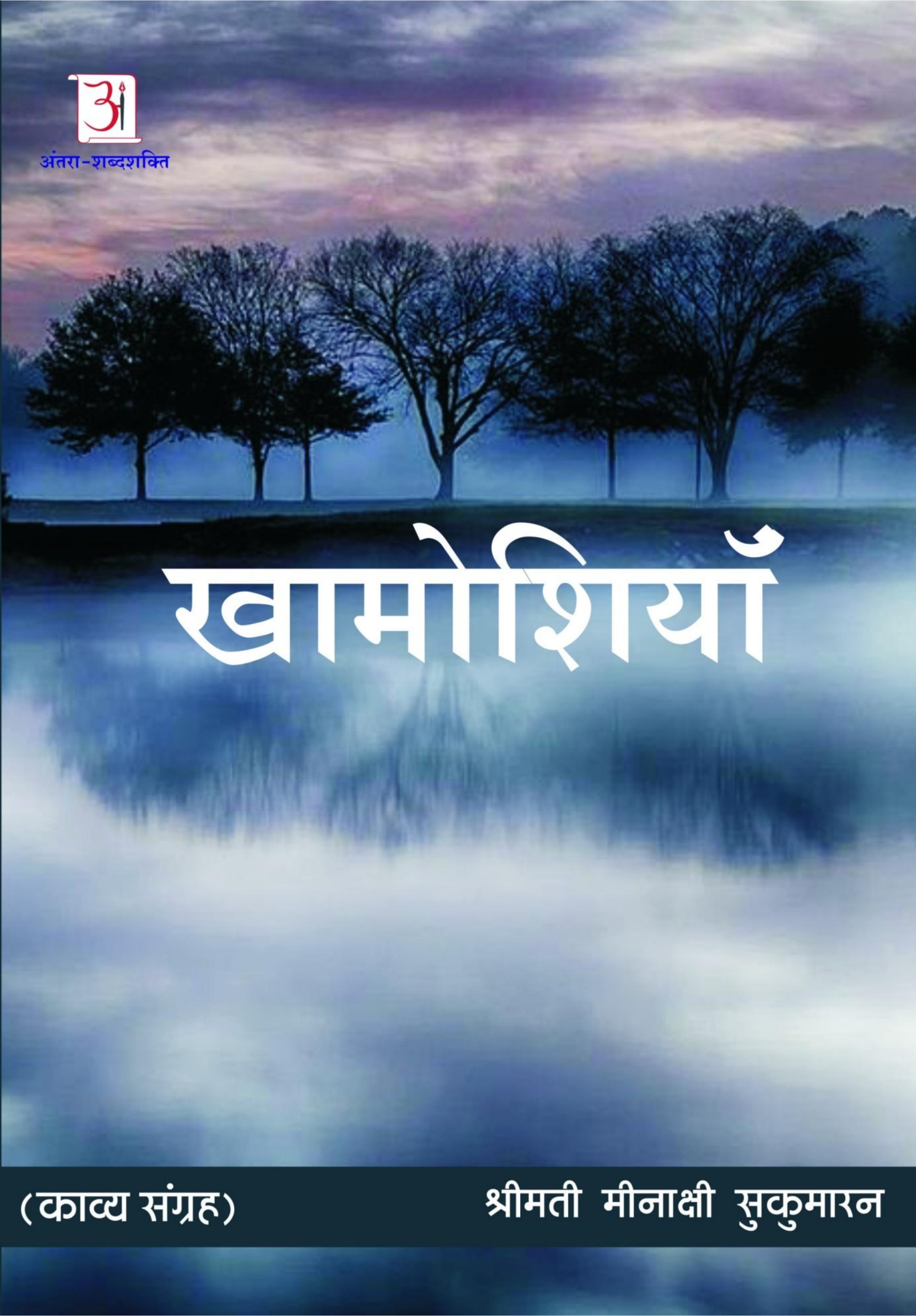

अंतरा-शब्दशक्ति

खामोशियाँ

(काव्य संग्रह)

श्रीमती मीनाक्षी सुकुमारन

खामोशियाँ

(काव्य संग्रह)

मीनाक्षी सुकुमारन

अन्तराशब्दशक्तिप्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-58-2

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अण्डाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ ©मीनाक्षी सुकुमारन

मूल्य:४०.००रुपये

आवरणचित्र:संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलूकम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Khamoshiyan by 'Minakshi Sukumaran'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

|| जय माता दी।।

जैसे हर मौसम का अपना एक अलग मज़ा है वैसे ही भावों में पिरोये शब्द भी कभी दिल को छू जाते हैं, कभी आँखें नम कर जाती हैं, कभी गुदगुदा जाती हैं, कभी सहमा, कभी रोष, कभी दर्द तो कभी होठों पर हंसी | ऐसे ही मिले जुले एहसासों की, भावों की शब्दों में ये कड़ी है जो दिल से उभरी है कभी तन्हाई में, कभी पीड़ा में, कभी हैरानी में, कभी परेशानी में |

कुछ कहने को आतुर इन खामोश एहसासों ने मन की तड़प को उजागर करते हुए 'खामोशियों' को शब्द दे दिए और भाव कब, कैसे प्रस्फुटित हुए, पता ही न चला। यथार्थ का सहारा लेकर मन के भावों को विभिन्न रूपों में समेटा है। गहन अनुभूति से परिपूर्ण मन की कसक व संवेदना को शब्दों में बाँधा है और प्रयास किया है कि उन एहसासों को पाठकों के हृदय तक पहुँचा सकूँ। सामाजिक अनुभूतियों, जीवन दर्शन एवं जज़्बातों की गहराई का शब्दों में बयान सरल नहीं होता, एक कोशिश है कि सरल शब्दों में अपने मन की बात अपने पाठकों तक पहुँचा सकूँ।

आप सभी के स्नेह की अभिलाषी

मीनाक्षी सुकुमारन

अनुक्रमणिका

1. संसार 5

2. जाड़े की धूप 6

3. ठिठुरन 7

4. बचपन 8

5. सत्य 9

6. कब तक तलाश करता रहूं 10

7. कलम 11

8. लम्हों की गुज़ारिश 12

9. तिरंगा 13

10.असमंजस में हूँ 14

11.ख्वाब या हकीकत 15

12.सैलाब 16

संसार

देख तेरे संसार की हालत
क्या हो गयी भगवान,
कितना बदल गया इंसान,
नोटों ने दिखाया ठेंगा
कहीं रिश्तों को,
कहीं देश को,
कहीं रणनीति को,
कहीं वोटों को,
कहीं जनता को,
कहीं सत्य को,
कहीं न्याय को,
कहीं आज को,
कहीं भविष्य को,
यूँ हुआ बोलबाला
घोटालों, बैंक स्कैम
डिफेन्स स्कैम, फर्जी नौकरीयाँ,
पेपर लीक, ऑनलाइन चीटिंग,
बड़े बड़े लोन ले हो जाना
नौ दो ग्यारह
बड़े बड़े पूँजीपतियाँ का,
दिखा ढेंगा बड़ा सा देश
और न्याय प्रणाली को,
देख तेरे संसार की हालत
क्या हो गयी भगवान,
कितना बदल गया इंसान,
बना ईमान को,
बना नियत को,
बना सही गलत को,
बना आत्मा को,
एक खिलौना
चंद खनकते सिक्कों के लिये,
यूँ कहीं लगे दाँव पर
घर परिवार,
कहीं भविष्य,
कहीं मासूमियत,
कहीं ज़िन्दगी,
देख भगवान यूँ खोल अपनी
आँखें,
कितना बदल गया
इंसान और ये संसार।।

जाड़े की धूप

जाड़े की धूप
लगती कितनी भली,
देती राहत ठिठुरन से
मीठी मीठी गुनगुनी सी,
धूप जाड़े की
मिल संग बैठते लोग पार्कों में,
घर की मुडेरों पे
खाते गाजर, मूली, मूँगफली,
औरतें करती बुनाई नर्म ऊन
के गोलों से,
बुज़ुर्ग निहारते अखबारों की
सुर्खियाँ,
नन्हे मुन्ने भी खूब लेते मज़े
जाड़े की धूप का,
यूँ हर किसी के लिए वरदान सी
जाड़े की धूप,
अनजाने में बांधती बंधन साथ का
यूँ प्यार भरा ,गरमाहट भरा ||

ठिठुरन

फुटपाथ के किनारे
सड़कों पे
खुले आसमान तले
कैसे जिंदा रहते
होंगे मासूम ठिठुरते
सर्द रातों में
न तन पे कपड़ा
न गर्म स्वेटर
न कंबल, न रजाई ।।
कैसे सांस लेती होंगी
वृद्ध काया झेलती
सर्द थपेड़े ठिठुरते
कोहरे से पसरी रातों में,
कैसे जीते होंगे नर नारी
यूँ इन सर्द महीनों ठिठुरते
बेबस बेसहारा
यूँ खुले आसमां तले
फुटपाथों पे ।।

बचपन

बचपन को
कभी बहलाया
खेल खिलौनों ने
कभी सहलाया
माँ के स्पर्श ने
बस तुतलाती बेफिकरियाँ ।

टीनऐज को
घेरा सवालों ने
उम्र के फांसले को
जो न था बच्चा न सयाना
यौवन को गुदगुदाया
अल्हड़ बातों ने
बन किस्से कहानियां।

हर बात लगती भली
बस एक सपने जैसी
यूँ न वक्त रुका न उम्र
कब यौवन सपनों के संसार से
ज़िन्दगी की कसौटियों में
ढला, तपा,
बिखरा, संवरा
बना, टूटा होने को प्रौढ़ ।

वक्त की सूई के साथ
घूमते रहे उम्र के पड़ाव
न भाता कुछ इस दौर
न शरीर की पीड़ा
न मन की पीड़ा
न तन्हाई की पीड़ा
बस बिखरा सा लगे
कभी तन तो कभी मन ।

पर जब तक हैं साँसे
जीना है तो फिर क्यों
मन मार घुट-घुट कर
आहें भरना
देनी हो मात उम्र को
तो मरने न दो मन को
रुखों अपने शौंक ज़िंदा खुलकर
महकने दो।

अपने शब्दों को खुलकर
चहकने दो
अपने सुरों को खुलकर
सांस लेने दो
बागवानी को खुलकर
बिखरने दो
खुशबू पकवानों की
भाये जो तुम्हें
उस शौक के साथ
दो मात उम्र को।।

सत्य

कल हुई मुलाकात
जीवन के शास्वत सत्य से
जिसे कई बार सुना
जिसे कई बार पढ़ा
जिसे कई बार देखा
किस्सों, कहानियों, बातों,
चलचित्रों में
पर रूबरू पहली बार
सब बंधन तोड़
सब रिश्ते छोड़
समा चिता पर
हो जाता है ये तन
अग्नि को समर्पित
और कोई भी रोकनहीं पाता
पकड़ हाथ
रोक राह
कर हठ
या कोई भी यत्न
कोई भी रिश्ता ।।
एक ही जगह
एक के बाद
कितनी ही
चिताएँ जल रहीथीं
और मन उतना ही
बेबस
हैरान
परेशान
गमगीन

देख ये मंजर
सोचता यही सच है
तो फिर क्यों रहते हैं
रिश्ते तने तने
रिश्ते बिखरे बिखरे
रिश्ते खफ़ा खफ़ाजीवन भर
और इस पल सब बेबस
देखते ये मंजर भर आंखों
में आंसू हर अपना पराया।।
और हो जाताहै राख ये तन
छोड़ पहचान
पति, पत्नी, पिता, माँ,
ससूर, सास, दादा, नाना, नानी,
भाई, बहन, सखा, सहेली,
और हर उस रिश्ते की
जिन्हें जोड़ते रहते हैं
हम जीवन भर,
इस सत्य तक पहुंचने को
जो है ये जिस से हुए रूबरू
आज पहली बार
इस श्मशान भूमि
जहां न धर्म का
जहां न वर्ग का
जहां न नर का
जहां न नारी का
सब की चिता
सब की मुक्ति
एक ही जैसी।।

कब तक तलाश करता रहूं

ए दिल
पत्थर की गलियों में
कब तक तलाश करता रहूं
एहसास के घरौंदे,
खुशियों के शहर
जहाँ हो प्यार बरसता
जहाँ हो अपनापन महकता
जहाँ हो दिल खिलता
न हो रुदन कोई
न हो द्वन्द कोई
न हो जलन कोई
न हो बैर कोई
बस हो चहक
बस हो महक
बस हो प्यार
ए दिल बहुत
जल चुका देश मेरा
नफरत की चिंगारियों से,
सियासत की आँधियों से,
बेसबब निर्दोष लाशों से,
अब तो थम जाये ये वेग
और
हो तलाश पूरी मेरी
खोजती प्यार नफ़रतों की बस्ती में।।

कलम

प्यार की दास्तां लिखूं
तो महकती है कलम।।
दर्द की कराह लिखूं
तो सिसकती है कलम।।
सौन्दर्य की दिलकशी लिखूं
तो कसमसाती है कलम ।।
वीर, वीरांगनाओं, शहीदों
की वीरता, शहादत लिखूं
तो इतराती है कलम ।।
वहशीपन, दरिंदगी, आंतकवाद
की शर्मिंदगी लिखूं
तो सुलगती है कलम ।।
न करो टुकड़े दिलों को
मज़हबी तलवारों से
न जलाओ देश को
नफरत की चिंगारियों से
करती अर्ज ये कलम।।
हो सुकुन , अमन, हँसी
ही बस हर घर आंगन
आँख न हो कोई नम
करती दुआ ये कलम,
करती दुआ ये कलम।।

लम्हों की गुज़ारिश

उतर से पूर्व
पूर्व से पश्चिम
पश्चिम से दक्षिण
खाड़ी से सरहद
सरहद से देश
देश से नगर
नगर से गांव
हर घर, हर आंगन
हर दिल, हर चेहरे
पर बस खौफदर्द, आँसू, मायूसी
है लम्हों की गुज़ारिश
रोक दो नफ़रतों की जंग
जो सिर्फ देती है दर्द ,तड़प
अपनों को खोने का
अपनों से बिछड़ने का
कब तक लाशों के ढेर पर
चलती रहेंगी सियासतें
कब तक मंडराते रहेंगेकहर के बादल
कब तक बहता रहेगामासूम खून
कब तक उजड़ते रहेंगेघर, खेत, खलिहान
कब तक बन शरणार्थी, रिफ्यूजी,
भड़कते रहेंगे लोगअपनी जड़ों से
बस अब बस करो नफ़रतों के ये दौर
है दिल की गुज़ारिश
थाम दो बस अब इस बैर को,
थाम दो इन युद्धों के कहर को,..

तिरंगा

कहते हो
तिरंगा मेरी
आन, बान, शान है।

फिर क्यों
हर सड़क, हर चौराहे
बेच रहा दो रोटी को
मासूम बचपन
मज़लूब औरत
लाचार आदमी,
पूछो उस से क्या
कीमत है इस तिरंगे की?
तो हाथ फैला
कहेगा पांच रुपये
जितने बिकेंगे
उतना अच्छा
अब कहो
कैसी आन, बान, शान
है ये तिरंगा।
एक दिन के लिए
हर दफ्तर
हर सोसाइटी
हर स्कूल
हर गाड़ी
पर लहराएगा
बस एक तारीख भर
बस एक नियम भर।
काश कोई
पूछ लेता मोल इसका
पूछ लेता कीमत इसकी
उस माँ से
उस पिता से
उस बहन से
उस भाई से
उस पत्नी से
उस बच्चे से
जो खोता है
इस तिरंगे के लिये
अपना कोई
जो सरहद पर हो
जाता है शहीद
कि लहरा सके
ये तिरंगा
आन, बान, शान से।।

असमंजस में हूँ

कौन सी किताब
कौन से पन्ने
कौन से शब्द से उपजा ये बीज
द्वेष का
दुश्मनी का
कटुता का
दानवता का
उत्पात का
जिस ने मचा रखा है आतंक
हर देश, हर नगर
हर गांव, हर घर में।
असमंजस में हूँ
कौन सी किताब
कौन से पन्ने
कौन से शब्द
से उपजा ये बीज
मार दिये ज़ज़्बात सारे
और बना दिया हैवान
इंसा का दम भरने वाले मानव को।
बहुत ही निराश
बहुत ही असमंजस में हूँ
आखिरकौन सी किताब
कौन से पन्ने
कौन से शब्दने रच दिया ये
हैवानियत का खेल सारा
हैवानियत का खेल सारा।।

ख्वाब या हकीकत

ख्वाब में झिलमिलाते हैं
रंग हकीकत के
या हकीकत में रंग ख्वाब के?
है कह पाना उतना ही मुश्किल
जितना मुस्कुराती है नज़र
जब छलक आते हैं आँसू
या बहते हैं आँसू जब मुस्कुराती
है नज़र,
जैसे खिली धूप में पड़ी
ओस की बूंद की चमक हो
देखा सभी ने
पर बिखरी जब बन के
बूंद पानी की कहो तो
किसने देखा ...?
फिर बोलो क्या ख्वाब
क्या हकीकत?
क्या आँसू क्या मुस्कुराहट?
जब दर्द दोनों का समान
फिर क्यों रहते हैं
भागते हम निरर्थक,...
यूँ सुनसान गलियारों से
पूछते पता मुस्कानों का,
जब खो जाना है इसे
पल दो पल में
ओस की बूंद की तरह,
ये जानता है मन
फिर भी पल दो पल की
चाहत के लिए ही सही
भागता ही रहता है मन,
इक बूंद पानी की
मुस्कुराहट के लिए
और बुनता रहता है
ताने - बाने ख्वाब के,
आधे -अधूरे जाल
हकीकत के जालों में,
और फिर रहता है
वही दौर आँसू का
मुस्कुराहट तक
मुस्कुराहट का आँसू तक
आँसू का बूंद मुस्कुराहट तक
मुस्कुराहट की बूंद का
आँसू तक ||

सैलाब

है ये खामोश
"सैलाब"
कैसा अंजान खामोशियों का
क्या है सबब अंदेखियों का
क्यों टिमटिमाने लगे दीप यूँ चाहतों के
क्यों देखकर भी अनदेखा होने लगे
क्यों हसरत बनी हार
क्यों प्यार बनी दरार
कब चाहा था दिलों पर राज करना
कब चाहा था बुलंदियों पर छाना
हम ने तो बस थोड़ी सी जगह ही चाही
हम ने तो बस थोड़ी सी चाहत ही चाही
दिलों में ....पर हैरान है गीली आँखें
है कैसा ये सैलाब
है कैसा ये दौर
हर अपना हुआ जाये पराया
हर पराया बनना चाहे अपना।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - श्रीमती मीनाक्षी सुकुमारन

जन्मतिथि - 18 सितम्बर 1967 (नई दिल्ली)

माता-पिता - श्रीमती कान्ता वधवा - श्री बद्रीनाथ वधवा

पति - श्री सी.एन.सुकुमारन

शिक्षा - एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (इग्लिश)

निवास स्थान - डी.214, रेल नगर प्लाट नं. ए 1
सेक्टर 50, नोएडा (यु.पी.) 201301

फोन नं. - 9810862418

मेल आई.डी. - virgo67@ymail.com

संप्रति - कवयित्री/लेखिका

विधा - छंद मुक्त (स्वतंत्र भाव) कविता, कहानी, लघुकथा, संस्मरण, लेख आदि

रुचि - कविता लिखना, पुराने गीत (लता, मुकेश, रफ़ी), जगजीत सिंह, पंकज उदास की ग़ज़लें सुनना बेहद प्रिय है।

प्रकाशन - निजी काव्य संकलन :- 1. भाव सरिता, 2. अहसास ऐ अल्फाज़ प्रकाशित। काव्य संग्रह 'तरंग' शीघ्र ही अवलोकित।
- साँझा संग्रह :- 2014 से 2018 अब तक 37 काव्य संग्रह, 6 कहानी व 2 समीक्षा, 1 विचार मंथन संकलन प्रकाशित।
- गुफ्तगू हिन्दुस्तानी साहित्य की त्रैमासिक पत्रिका एवं महिला विशेषांक में 'परिशिष्ट'।
- सृजन समीक्षा (केन्द्रीय रचनाकार के रुप में हम प केन्द्रित)
- व्यक्तित्व कृतित्व टू मीडिया जून विशेषांक लोकार्पित।

सम्मान/पुरस्कार- साहित्य गरिमा 2014, साहित्य गौरव 2014, नारी गौरव 2015, काव्य गौरव 2015, माँ शारदे उत्कर्ष सम्मान 2015,दीपशिखा 2016, शब्द कलश 2016, साहित्य सम्मान 2016, युग सुरभि 2016, नारी सागर 2016, श्रेष्ठ शब्द शिल्पी 2016, राष्ट्रीय स्त्री शक्ति 2016, साहित्य गौरव आदि अनेकों सम्मान से सम्मानित।
- विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ द्वारा 'विद्यावचस्पति' उपाधि से सम्मानित।
- स्पेशल जूरी अवार्ड 2018, डायमंड एचीवर अवार्ड 2018, सुभद्रा कुमारी चौहान सम्मान 2018
- राष्ट्र गौरव अवार्ड 2018, राष्ट्रीय नारी गौरव अवार्ड 2018, भारतीय गौरव अवार्ड 2018,
- द मीडिया साहित्य सम्मान 2018 एवं अनेंको सम्मान से सम्मानित।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-88102-58-2

मूल्य- 40/-